The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 5 | May 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

राजस्थानी साहित्य: विसर काव्य परम्परा

महिपाल दान

करणी माता का मंदिर चारण होस्टल, पोकरण, जैसलमेर, राजस्थान, भारत

Email: mahipaldan70112@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15683839

राजस्थानी साहित्य विविध व विस्तृत हैं यह शक्ति व प्रेरणा का काव्य हैं इसी साहित्य के अंतर्गत सर काव्य व विसर काव्य परम्पराओं की रचनाएँ एक साथ हुई। राजस्थानी साहित्य को सामान्यतः श्रृंगार व वीर रस के काव्य के रूप में देखा जाता रहा है। वह राजाओं व सामंतों की प्रशंसामूलक साहित्य की दृष्टि से देखा जाता है। किंतु विसर काव्य राजस्थानी साहित्य एक दूसरा पहलू की ओर ध्यान आकर्षित करता है। सामान्यतः राजस्थानी साहित्य सर काव्य (वीर रस) के काव्य रचनाओं के लिए जाना जाता है। इसी वीर काव्य के साथ कवियों ने विसर (आलोचनात्मक काव्य) की भी रचना की। विसर काव्य अर्थात व्यंग्य व आलोचनात्मक काव्य। वीर काव्य के अंतर्गत जिन कवियों ने राजाओं व सामंतों के सद्कार्यों जैसे दानवीरता, युद्धवीरता व दयावीरता, धर्मशीलता आदि का प्रशंसामूलक चित्रण किया उन्हीं कवियों ने विभिन्न सामंतों के अत्याचार, अनाचार व कायरता व क्रूरतापूर्ण कार्यों की तीखी आलोचना भी की।

जिस प्रकार कवि लोक जीवन व जन चेतना की अभिव्यक्ति करता है। उसी प्रकार राजस्थानी साहित्यकारों ने मुक्तकंठ से उन राजाओं व सामंतों की अमर्यादित व कुकृत्यों की कटु आलोचना की। इसी तरह कवि एक स्वतन्त्र सृजक व निरंकुश व्यक्ति होता हैं इसीलिए उसे ब्रह्म के समान दर्जा दिया गया है। वह नीर-क्षीर विवेक का धनी और तत्कालीन समय का दर्पण होता है। अपने काव्य में बिना किसी लाग लपेट के अच्छी व सच्ची बातों व कार्यों की प्रशंसा व कुकृत्य व बुरे कार्यों की कटु शब्दों में आलोचना करता है। और वह लोक-चेतना का विकास करता है।विसर काव्य राजस्थानी साहित्य में विविधता का विस्तार करता है। विसर काव्य के उदाहरण बहुत से ग्रंथों में मिलते है। अतः राजस्थानी विचर काव्य हिंदी साहित्य में राजस्थानी साहित्य के विस्तार व नई काव्यधारा को प्रकाश में लाएगी। इस तरह हम कविता के क्षेत्र में राजस्थानी काव्य का अधिक विस्तृत मूल्यांकन कर सकेंगे। इसी तरह राजस्थानी साहित्य में कवियों सर काव्य (वीर काव्य व प्रसंशामूलक काव्य) साथ-साथ विसर काव्य (आलोचनात्मक काव्य) की रचना की। वह कवि उस समय की अच्छाई व बुराईयों को अपने काव्य का वर्ण्य विषय बनता है। उस कवि की सोच विस्तृत व समष्टिमूलक होती है। वह वीर क्षत्रियों के लिए संजीवनी बुटी की तरह है तो कायर व पतित व्यक्तित्व के लिए जहर के समान है। वह विसर एक अर्थ साँप भी होता है। जिस तरह प्रत्येक काव्यांश में सच की अभिव्यंजना करते हुए राजस्थानी कवियों ने विसर काव्य लेखन के द्वारा दूसरे पक्ष भी चित्रण बड़ी बेबाकी से किया। इसी प्रकार राजस्थानी साहित्य में कवियों ने विपरीत सामाजिक परिस्थितियां के होते हुए भी बिना किसी लाभ-हानि के बारे में सोचे अपनी स्वाभाविक भावनाओं की अभिव्यंजना की जैसा इस दोहे में विदित होता है।

भूँडो हो या भलो, हे विधना रै हाथ।
कवि नै तो कहणी पड़े, वैबी जकोई तात।।"

राजस्थानी कवियों ने विसर काव्य के द्वारा तत्कालीन शासकों व सामंतों के अमानवीय व अमर्यादित कार्यों की आलोचना अपने काव्य के द्वारा की। बिना किसी डर व राजशी कोपभाजन का परवाह किये उन्होंने अपना कवि कर्त्तव्य का निर्वहन किया।

"हू तो देखू जेड़ी दाखू।

हू तो कूड़ कडदे ना भाखू।।"

इसी प्रकार राजस्थानी कवियों अपने कर्त्तव्य का निर्वहन बेबाकी से किया। वह अपने समय के सच्ची अथवा बुरी बातों व कार्यों भी का चित्रण किया।

उदाहरण :

जब जयपुर राजा मानसिंह अकबर की सेना के साथ उदयपुर पर आक्रमण किया तब उन्होंने अपनी कीर्ति में गर्वोक्ति कही कि इस पिघोला झील पर या तो आज मैं अपने अश्वों को पानी पीला रहा हूँ या किसी समय राव जोधा ने अपने घोड़ों को पानी पिलाया था। उसी समय उनकी सेना में से एक कवि उपस्थित थे। जिसका नाम जग्गाजी खिड़िया था। उन्होंने महाराज मानसिंह जी की दर्पोक्ति का खंडन करते हुए कहा कि महाराजा मान सिंह बुरा मत मानिये किंतु इस में गर्व करने जैसा कुछ भी नहीं है जब राव जोधा ने अपने पराक्रम के बल पर पिछोला झील में घोड़ों को पानी पिलाया था किंतु आप यहां अकबर के बल पर आये हैं।

मान मन अंजसे मति,

अकबर बल हाया

जोधा जंगम आपरे,

पाणा बल पाया।"

उदाहरण : इसी तरह जोधपुर के राजा बख्त सिंह ने राजगद्दी के लिए अपने पिता अजीत सिंह की हत्या की। तो राज्य के एक कवि दलपतजी बारहठ ने पितृहन्ता की निंदा की व पितामार पच्चीसी नामक काव्य लिखा। निडरता के साथ उस निरंकुश राजा के कुकृत्यों व अत्याचार की भर्त्सना उसके सम्मुख की। जब महाराजा ने चामुंडा माता को भैसे की बली दी तो सभी आसपास के लोगों उनके बाहुबल की प्रशंसा की किंतु दलपत्त जी बारहठ ने उनके सम्मुख अपने काव्य शब्दों से कटु व्यंग्य करते हुए कहा :

"वा बगतो, वा ही बगत, वा की वा तरवार

बाप कटे जिण बहुआ, भैसे रो की भार।"

इससे नाराज होकर बखतसिंह ने उन्हें नागौर से देश निकाला दे दिया। किंतुउस समय भी कवि ने अपनी बेबाकी, निडरता का परिचय अपने शब्दों से दिया-

"नांक भींच निकलू जितो,थारो नागाणो नरियंद'

"दो हाथ हंनत री, दखल ना दला,

मारी हेमायत मात री, बीस हाथी।

उदाहरण : इसी प्रकार महाराजा अजीत सिंह द्वारा अपने निजी स्वार्थ के वशीभूत होकर अपने पुत्री इद्रकुवर का विवाह वृद्ध फरूखसियर से करा देने पर व जोधपुर राठौड़ वंश की कीर्ति को कलंकित करने पर कवि भभूदानजी ने अपने शब्दों उनके इस कार्य की आलोचना की:

"कालच री कुळ में कमधज शाची किमि आ रीत।"
दिल्ली डोलो भेजने, ते अबखी करी अजीत।"

इसी तरह राजा अजीत सिंह द्वारा देशभक्त दुर्गादास को देश निकाले पर उनकी कटु शब्दों में आलोचना की-

"महाराजा अजमाल री जब पारख जाणी,
दुर्गो देश निकाळो, गोले गुंगाठी।

उदाहरण : जब महाराजा बख्त सिंह जी जहांगीर के खिलाफ रण में बंदी बना लिये गये वह उसके भाई-बंधु युद्ध में पीठ दिखाकर भाग आये। तब कवि सीताजी बीठु ने उनके कायरतापूर्ण आचरण की आलोचना भरे राज दरबार में की कुछ इस प्रकार की:

"फिट विदा फिट कांधला, जंगलघर लोडांल। दलपत हुड ज्यू पडड़ियो, भाज गई भेडाह।।"

संदर्भ : उसी काल में करणीदान जी कविया ने बख्तसिंह के पुत्र अभयसिंह दरबारी कवि थे वह जब राजकवि थे। उन्होंने बखंतसिह अमर्यादित कार्यों की आलोचना की।

"बखतेस जनम पाया पछे, कीसी बात आछी करी।
प्रथम तात मारियां, मात जीवती जलायी
असी चार आदमी, हत्या प्यारी बण आयी।"

इस प्रसंग में एक दिन बखतसिंह अपने घोड़े को बापो-बापो कह के सहला रहे थे तोपास बैठे एक कवि उनके घोड़ो बापो कहने पर व्यंग्य करते है क्योंकि वह अपने पिता की तो हत्या कर चुका था।

"बापो मत के बख्त सिंह, कांपत हे केकाण, ऐकर बापो फिर क्यो, पंमग तजेला प्राण।

इसी परम्परा में अंग्रेजी ने राजाओं के आपसी फूट, वैमनस्यता आदि का फायदा उठाया। समस्त देश में ब्रिटिश राज को स्थापित कर लिया। उस समय भी राजस्थानी कवियों ने अपने कलम व कवि धर्म का पालन पूर्ण आत्मनिष्ठा के साथ किया। उस समय जोधपुर राजा मानसिंह के राजकवि बाकीदास आशिया ने अंग्रजोंके राज-काज व अत्याचारों की आलोचना की। उस समय जब देश के सभी राजा व शासक ब्रिटिश सत्ता के अत्याचारों के सम्मुख मौन थी। उस समय बांकीदास जी ने भारतीय जनमानस पर हो रहे शोषण के खिलाफ आवाज बुलंद की। ब्रिटिश के साथ उन राजे-रजवाड़ों की भी आलोचना की जो प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजों के कार्यों में साथ दे रहे थे।

"सुहड़ा सीख घटा नै समये
गोवे राखो गोला रूपिया जाय भरो अंगरेजो बगले बोला बाल।"

1805 में बाकीदाप्पी ने राजाओं के कायरतापूर्ण रवैये व अंग्रेजों के कुचालों की ओर संकेत किया।

आयो इंगरेज मुलक रै ऊपर, आहंस लीधा खैंचि उरा।

धणियां मरे न दीधी धरती, धणियां ऊभां गई धरा॥

इसी तरह बुधजी आशिया ने ब्रिटिश शासन के अत्याचारों व कुशासकों की आलोचना करते हुए लिखा है कि ऐसे शासकों का अंत अवश्यंभावी है। इनका अंत सुनिश्चित है जैसे रावण जैसे दंभी का अंत रीछ वानरों की सेना ने किया वैसे ही इनका अंत होगा।

"लालकनार्थ कहै हौ बाबा, किला गुमर मत कीजो लंका गुमर मत कीजो लंका रीछ-बादरा लूंटी दिण्ट जिकण पर दीजो।"

इसी तरह मध्यकाल व विभिन्न कालाखंडों में राजस्थानी साहित्यकारों ने विसर काव्य के द्वारा तत्कालीन सत्ता व शासकों विषम कार्यों की कटु आलोचना की । इसी परम्परा में मध्यकाल में दुरसा आदा, जाडाजी मेहडू, रंगरेला बीठु, नरहरिदासजी, करणीदानजी कविया, आदि व उन्नीसवीं शताब्दी में लोक चेतना के प्रतीक बाकीदास अशिया, बुधजी अशिया, सूर्यमल्ल जी मीसण, जन कवि उमरदान लालस तथा बीसवीं सदी में मुख कवि हिंगलाजदान कविया, अक्षयसिंह रतनू, बदरीदानजी शाकण आदि ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

इस प्रकार राजस्थानी साहित्य में विसर काव्य धारा एक महत्वपूर्ण साहित्यिक उपलब्धि हैं राजतंत्र के समय जब राजा सर्वोपरि व निरंकुश होता था। उस समय राजस्थानी कवियों ने अपने जीवन व लोभ लालच की परवाह किये बिना उनके अनैतिक कार्यों की कटु आलोचना करके अपना साहित्यिक धर्म निभाया।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

आधार ग्रंथ

- बांकीदास री ख्यात) नरोत्तम दास स्वामी(
- वीर सतसई (सूर्यमल्ल मिश्रण)
- उमरदान ग्रंथावली (शक्तिदान कविया)
- विरूद छिहत्तरी (दूरसा आढा)
- क्रिसन(पृथ्वीराज राठौड़) री वेलि-रूकमणी-, संपादक (नरोत्तमदास स्वामी)

सहायक ग्रंथ

- पत्रिका) चारण समागम(